उपसंहार

उपसंहार

हिंदी के प्रयोगशील नाटककार डॉ. शंकर शेष के व्यक्तित्व और कृतित्व का वस्तुपरक आकलन का प्रयास [illegible] प्रथम अध्याय में किया है। सरलता, संवेदनशीलता, विनम्रता, जिज्ञासुवृत्ति, स्पष्टवादिता, अध्ययनशीलता, संघर्षशीलता, प्रबल आत्मविश्वास, महत्वकांक्षा जैसी महत्वपूर्ण विशेषताओं ने उनके जीवन के आंतरिक पक्ष को समृद्ध बनाया था। परिवर्तन यह उनके जीवन का अंग बन गया था। इसी कारण आर्थिक कठिनाईयों के साथ संघर्ष करने में उनका समग्र जीवन बीत गया। आत्मबल की प्रबलता के कारण संघर्ष में भी दृढ और आशावादी रहना उनकी सहज प्रवृत्ति रही है। दूसरों में भी आत्मबल का निर्माण हो इसी लिए उन्होंने रचनाओं को माध्यम बनाया। उनके व्यक्तित्व के अनुशीलन से हमें जीवन के संघर्ष पथ पर ईमानदारी के साथ अथक परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है।

डॉ. शेष संवेदनशील होने के कारण समाज से जो उन्होंने पाया महसूस किया उसी प्राप्त अनुभवों को सृजनशक्ति द्वारा अपनी साहित्य रचनाओं में उन्होंने प्रतिबिम्बित कर दिया। अध्ययन के उपरान्त स्पष्ट होता है कि 'घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य' और 'पोस्टर' यह ऐसी ही अनुभूतियों, प्रेरणाओं और तात्कालीन बाह्य परिस्थिति की देन है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत डॉ. शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय देकर उनके नाट्य निर्मिती के पीछे छिपे उद्देश्य को खोजने का प्रयास किया है। सभी नाटकों का सफल मंचन यह शेष के नाटकों की विशेषता रही है। नाट्य लेखन में उन्होंने नौटंकी, कीर्तन, आदि सभी शैलियों का सफलता से निर्वाह किया है। 'बंधन अपने अपने', 'एक और द्रोणाचार्य', 'घरौंदा', 'रक्तबीज' जैसी कृतियाँ महानगरीय संस्कृति में पनपनेवाली मूल्यहीन और अनैतिक प्रवृत्तियों को दर्शाने में सफ़ल रही है। इसमे नाटककार ने मध्यवर्ग की नपुसंकता पर कड़ा प्रहार किया है। 'इस्तेमाल' की स्वार्थी प्रवृत्ति को 'रक्तबीज' के माध्यमसे समाज के सन्मुख लाकर उस प्रवृत्ति की हत्या करने के संकेत दिये हैं। 'बाढ़ का पानी' जातियता की सामाजिक प्रवृत्तिपर आघात करता है तो 'चेहरे' दोहरे मुखौटे की आंतरिक प्रवृत्ति को चूर-चूर कर देता है।

महानगरीय मध्यवर्गीय चित्रण करने के साथ उन्होंने 'पोस्टर', 'राक्षस', 'बाढ़ का पानी' जैसे नाटकों के माध्यम से ग्रामिण और आदिवासियों के गुंगे इतिहास को मुखर स्वर दिया है। नौटंकी जैसी लोकरंजन के साथ हमारी विसंगतियों और विदृपताओं को उजागर करनेवाली नाट्यशैली अपनाकर 'अरे मायावी सरोवर' के माध्यम से जनचेतना जागृत करने में योगदान दिया है। 'एक और द्रोणाचार्य', 'राक्षस', 'रक्तबीज' में प्राचीन मिथकों को आधुनिकता के साथ जोड कर पाठकों के मन में आत्मपरिक्षण भाव जागृत किया है। प्राचीन विषयवस्तु लेकर खड़ी रही 'कालजयी', 'खजुराहो का शिल्पी', 'कोमल गांधार' जैसे रचनाएँ उनकी अध्ययनशीलता के साक्षी है। प्रयोगशीलता यह उनकी विशेषता रही है।

तृतिय अध्याय के अंतर्गत समस्याओं का स्वरूप, वर्गीकरण एवं विशेषताओं की चर्चा की है। अतः समस्या एक उलझन, कठिन अवसर के सिवाय कुछ भी नहीं है। एक समस्या से ही दूसरी समस्या का निर्माण होता है। समस्या के आंतरिक और बाह्य समस्या यह दो प्रकार होते है। आंतरिक समस्या यह बाह्य समस्या की जड़ होती है। समस्या यह मानव की अतृप्ति, इच्छाएँ, क्रूर महत्वाकांक्षा के प्रतिफल के रुप में उभरती है। आधुनिक युग में सभी क्षेत्रों में अभुतपूर्व क्रांति के बदौलत नये दृष्टिकोण स्थापित हुए है। कार्लमार्क्स, फ्राईड, डार्विन जैसे विद्वानों के कारण समस्या की तरफ देखनेवाली नई दृष्टि प्राप्त हुई है। नाटक विधा इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही। समस्या चित्रण करते वक्त अपेक्षाएँ रहती है कि समस्या चित्रण में विचारतत्व, भावतत्व और सौंदर्यतत्व में योग्य मात्रा में संतुलन हो। कल्पनातत्व से जादा 'वास्तव' का प्रभाव हो। समस्या चित्रण करते वक्त बौध्दिक, वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से विचार करना आवश्यक है। आधुनिक युग में आए हुए परिवर्तन के कारण समाज के दृष्टिकोण, विचार, मूल्य, परंपराएँ बदलाती जा रही है। उनको आर्थिक और व्यवहारिक धरातलपर देखा जा रहा है। इस समय सामाजिक सुख, शांति, प्रगति के लिए आवश्यक है कि समाज में लोगों का समस्याओं से अवगत कर उसमें प्रतिकार का भाव उत्पन्न करे, मूल्यों की प्रतिस्थापना की जाए। यह कार्य नाटक यह दृक-श्राव्य जैसा साधन होने के कारण दूसरी साहित्यविधा से जादा समर्थतासे नाटककार कर सकता है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत आलोच्य नाटक 'घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य' तथा पोस्टर में चित्रित समस्याओं को उजागर किया है। 'घरौंदा' में मध्यवर्ग के विड्म्बनामय जीवन का चित्र उभरा है। घरौंदा नाटक की मुख्य समस्या 'मकान' की है। सुदीप को अपने तीन साथियों के साथ मकान के अभाव में लॉज में रहना पडता है हर एक की पारिवारीक स्थिति अलग है लेकिन समस्या एक ही है। यह दिखाने की

कोशिश नाटककार ने की है। 'फ्लैट' के सपनों के लिए पाँच सालतक बचत करते हुए छाया, सुदीप अपनी वास्तव ज़िंदगी को खंडहर बनाते है। महंगाई की समस्या के कारण उनका सपना हर बार हाथों से फिसलता जाता है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने महानगरों में व्याप्त 'मकान की असफल लडाई का चित्रण किया है।

बिल्डर द्वारा 'मकान' का सपना दिखाकर दिन दहाडे लोगों को लूटना, इसी हादसे का शिकार होकर गुहा का आत्महत्या करना, बिल्डर का इतना सब कुछ होने पर भी बाल भी बाँका न होना, न्याय और कानून व्यवस्था की समस्या की तरफ अंगुली उठाता है। सुदीप और चोपडा के आदतों के माध्यम से व्यक्तिगत सांस्कृतिक मूल्यों का होटेल-क्लब संस्कृति में बहते जाना दर्शाया है। सुदीप के कथनों के द्वारा उपभोगवादी संस्कृति के 'पीछे दौडना' और शील एवं चरित्र्य के प्रति बढ़ती अनास्था की प्रवृत्ति की तरफ नाटककार ने संकेत किया है। अर्थ की प्राप्ति के लिए सुदीप प्रेमिका छाया का इस्तेमाल करता है। वह प्रेम के आड़ किए जानेवाले प्रेम शोषण की शिकार रही है। मोदी को पूँजिवादी वर्ग का प्रतिनिधि मानकर वर्गसंघर्ष की गलत लड़ाई खेलने की प्रवृत्ति सुधा की ज़िंदगी उजाड़ देती है। सुदीप-छाया 'मकान' के अभाव में होनेवाली घूटन, मोदी की दमित वासनाएँ, शादी के बाद छाया को होनेवाला लघुता का एहसास सभी घटनाओं में मनोवैज्ञानिक समस्या सशक्तता से चित्रित हुई है। इसके साथ दहेज और सूदखोरी जैसी समस्याए भी आती है।

'एक और द्रोणाचार्य' में अर्थ की कमी यदू और लीला को असंतुष्ट बना देती है। 'गरीबी की समस्या' से हार कर 'कृपी' और 'लीला' अपने अपने पतियों को विपथगामी बना देती है। सुविधाभोगी वृत्ति प्रिन्सिपल को लाचार बना देती है तो दूसरी तरफ अन्न की दासता द्रोणाचार्य को अन्याय सहने के लिए मजबुर कर देती है। अनुराधा पर बलात्कार की कोशिश और द्रौपदी का किया गया चीर-हरण की दो घटनाए 'नारी समस्या' के रुप में उभरती है। अनुराधा के माता, पिता और अरविंद का क्रमशः पैसे और ब्लैकमैलिंग के जरिए मुँह बंद कर दिया जाना 'व्यवस्था का दमनचक्र' की समस्या को दर्शाता है। शिक्षा प्रणाली में 'राजनीति और शिक्षा का गठजोड,' भ्रष्टाचार आदि समस्याओं का निर्माण प्रेसिडेन्ट जैसे लोगों के कारण होता है। परीक्षाओं में किए जानेवाली नक़ल का संदर्भ लेकर राजकुमार और चंदू दो विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से शिक्षा और राजनीति के गठजोड चित्रित किया है। साथ ही सरकारी ग्रँट का शिक्षा संस्थाओं में किया जानेवाला दूरुपयोग भी दर्शाया है। अरविदं और द्रोणाचार्य का होनेवाला नैतिक पतन मूल्यों के

अवमूल्यन को प्रस्तुत करता है। विमलेंदू का प्रेत-आत्मा जैसे कल्पित पात्र के संवादों से हर पात्र की आंतरिक स्थिति से हमें अवगत किया है। साथ ही व्यक्ति के दोहरी ज़िंदगी जीने की प्रवृत्ति का पर्दाफ़ाश किया है। मनोवैज्ञानिक चित्रण सभी घटनाओं में दृष्टिगोचर होता है।

द्रोणाचार्य द्वारा 'एकलव्य का गुरुदक्षिणा के आड़ में किया शोषण' के पीछे विभिन्न दृष्टिकोण है। वह दृष्टिकोण एक साथ 'क्रूरता भरी महत्वाकांक्षा की समस्या', 'जातियता की समस्या' और 'वर्ग संघर्ष' की समस्या को जन्म देते हैं। यही डॉ. शेष जी के समस्या चित्रण की महत्वपूर्ण सफलता है। कम-से-कम घटनाओं के माध्यम से जादा-से-जादा समस्याओं का चित्रण सशक्तता से किया है।

'पोस्टर' के माध्यम से डॉ. शेष जी ने आदिवासियों के किया जानेवाले शोषण को मुखर स्वर दिया है। मजदूरों को 'गरीबी' और निरक्षरता की समस्या ने प्रभावित किया है। ऐसे लोगों की कमजोरी का फ़ायदा उठाकर पटेल जैसे पूँजिपति किस प्रकार लेते है और उनका आर्थिक शोषण करते है इसे हमें अवगत कराने का प्रयत्न नाटककार ने किया है। इस नाटक के माध्यम से 'न्याय कानून की समस्या' और 'धार्मिक समस्या' 'आर्थिक शोषण समस्या' के निर्माण में सहायक की भूमिका किस प्रकार साकार करती है यह दिखाने की कोशिश की है। चैती का उपभोग लेने की महत्वाकांक्षा पटेल को क्रूरता से भर देती है। गरीब लडकी पर किया गया बलात्कार और चैती का जबरन किया गया यौन शोषण 'नारी समस्या' को दर्दनाक रुप में प्रस्तुत करता है। 'वर्गसंघर्ष' की समस्या का उद्भव, विस्तार, चरमसीमा सभी पहलूओं को समस्या चित्रण द्वारा प्रस्तुत किया है। पटेल शोषक वर्ग का प्रतिनिधि है और मजदूर शोषित वर्ग के प्रतिनिधि है। पटेल और अफ़सर के संवादों से नारी के प्रतिहीन दृष्टिकोण को यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है। कीर्तनकार और श्रोता - 1 के बीच घटीत संवादों से सूच्य रुप से 'जातियता की समस्या' मुखरित हुई है। इसी तरह विभिन्न पृष्ठभूमि पर सशक्तता के साथ समस्याओं का चित्रण किया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत डॉ. शंकर शेष के आलोच्य नाटकों में चित्रित समस्या का तौलनिक अध्ययन किया है। नाटककार के विवेच्य नाटकों नें समस्याओं का चित्रण करते वक्त विषय, पात्र, स्थल, काल इसमें वैविध्य लाते हुए दिखाई देते है। नाटककार डॉ. शेष जी ने जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त समस्या के सभी पहलूओं को उजागर करने में सफलता अर्जित की है।

प्रति दिन एक रुपये में परिवार को जीवित रखनेवाले 'पोस्टर' के मजदूर हैं। तो दूसरी तरफ एक रुपया प्रतिदिन चायपानी के लिए खर्च करनेवाले 'घरौंदा' के सुदीप, छाया। तिसरी तरफ 'एक और

द्रोणाचार्य' का प्रतिमाह पाँच सौ वेतन पानेवाला 'अरविंद' तीनों भी अर्थ के कमी से परेशान है। उनके तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष निकलता है कि कौनसी भी आर्थिक समस्या 'अर्थ' के मूल्य (कीमत) पर नहीं वर्ग के स्तर पर आधारभूत होती है। यही दिखाने का प्रयत्न नाटककार करता हुआ दिखाई देता है।

शेष जी के नाटकों में नारी पात्र कम मात्रा में दिखाई देते है। फिर भी नाटकों में नारी समस्या प्रमुख रुप से उभरती है। 'पोस्टर' जैसे नाटक में सिर्फ़ एक नारी पात्र है। लेकिन यह नाटक नारी के यौन शोषण की समस्या को लेकर खड़ा है। विवेच्य सभी नाटकों में सभी स्तरों के नारियों के शोषण को नाटककार ने स्वर दिया है। उनमें प्राचीन राजघराने सें लेकर महानगरों के मध्यवर्गीय नारी तक आदिवासी नारियों से लेकर नौकरपेशा नारियों तक सभी नारियों को विभिन्न हथकंडे अपनाकर त्रस्त करनेवाली समस्याओं को उठाया है।

मूल्यविघटन की समस्या को अलग ढंग से उन्होंने प्रस्तुत किया है। विवेच्य नाटकों में मूल्यों को तोडनेवाले सभी पात्रों अंतरद्वंद्व द्वारा मूल्यों का महत्व प्रतिपादीत किया है।

'वर्ग संघर्ष' की समस्या के अलग अलग पहलूओं को उन्होंने दिखाया है। 'पोस्टर' में व्याप्त वर्ग संघर्ष का मूल आधार 'अर्थ' और 'नारी का किया जानेवाला यौन शोषण' का विरोध करना है। 'एक और द्रोणाचार्य' में वर्गसंघर्ष की भावना का आधार 'धर्म' यह है। 'घरौंदा' में 'गलत बदले की भावना' तथा 'स्वार्थ' को 'संघर्ष' का मुखौटा पहनकर वर्गसंघर्ष किया गया है। 'वर्ग संघर्ष' के विभिन्न स्वरुपों को शेष जी ने प्रस्तुत किया है।

विवेच्य नाटकों में 'पटेल', 'सुदीप', 'द्रोणाचार्य' और 'प्रेसिडेन्ट' इन पात्रों में क्रमश: 'कामभावना', 'धनप्राप्ति', 'अहंकार भाव' और 'पद और प्रतिष्ठा की लालसा' के कारण निर्माण महत्वाकांक्षा क्रूरता से उन्हे लबालब भर देती है। परस्पर भिन्न लालसाओं के कारण उत्पन्न अलग-अलग महत्वाकांक्षाएँ पाठक के मन को झंझोडकर रख देने में समर्थ हैं।

साम, दाम, दंड और भेद नीति का अवलंब आज किस तरह व्यवस्था का दमनचक्र चलाते वक्त किया जाता है। इसका यथार्थ चित्रण नाटककार ने किया है। साथ ही साथ नाटककार ने शक्तिशाली शब्दों के माध्यमसे मनोवैज्ञानिक समस्या सफलता पूर्वक चित्रित कर दी है।

विवेच्य नाटकों में संघर्ष अनेक स्तर पर दिखाई देता है। आंतरिक संघर्ष जादा मात्रा में है। उनके समस्या चित्रण में संघर्ष के साथ 'हार' 'पराजय' भी है। लेकिन निराशा का स्वर नहीं है। 'घरौंदा' सुदीप की ज़िंदगी से हारने के बाद अंत में जीवन का सही पथ का उसे दर्शन होता है। 'पोस्टर' में कल्लू और मजदूर साथी हार जाते हैं। उन्हें बुरी तरह कुचला जाता है। लेकिन यह घटना नई प्रेरणा के रूप में पाठकों में नई चेतना का निर्माण कर देती है। नयी आशा, नया संदेश, नयी प्रेरणा देना डॉ. शेष के रचना धर्मिता का मुख्य उद्देश्य रहा है।

शेष जी ने आदिवासी से लेकर भिन्न मध्यवर्ग तक और मध्यवर्ग से लेकर उच्चवर्ग तक सभी वर्गोंका सफलता तथा सशक्तता से चित्रण किया है साथ ही व्यक्ति के नैसर्गिक जीवन विकास में अवरोध उत्पन्न करनेवाले गैरमूल्यों की मिमांसा की है।

कहीं भी चित्रण अस्पष्ट और अधुरा अथवा दूर्बल नहीं दिखाई देता उनके नाटकों में सामाजिक समस्याएँ केवल वैचारीक धरातल पर ही नही बल्कि अनुभूति और अभिनय का अंग बनकर प्रस्तुत हुई है। एक समस्या को अलग अलग पहलूओं को सशक्तता के साथ चित्रित करने में डॉ. शंकर शेष ने सफलता पायी है।

प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियाँ

1) डॉ. शंकर शेष एक संवेदनशील और सामाजिक जिम्मेदारियों से कटिबध्द थे। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य कृतियोंपर स्पष्ट रुप से अभिव्यक्त हुआ है। उनका व्यक्तिगत जीवन तथा लेखन युवा पीढ़ी के लिए निश्चय ही प्रेरणादायी साबित होगा।

2) नाटककारने यथार्थ के धरातलपर मानवतावादी नैतिक मूल्यों की स्थापना की है। जो समाज के उन्नति के लिए सहायक होगी।

3) विवेच्य नाटकों के माध्यम से नाटककार ने समस्या का सूक्ष्मता के साथ चित्रण करते हुए समस्या से जुडे हर पहलू की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। जीवन की विसंगतियों का पर्दाफ़ाश करते हुए पाठकों के विचारों को आंदोलित करने का सक्षम प्रयत्न किया है। जिससे पाठक को जीवन के तरफ देखने की नई दृष्टि प्राप्त होती है।

4) विवेच्य नाटकों में संघर्ष, हार, दुःख, वेदना के साथ आशावादी स्वर भी विद्यमान है जो नई चेतना, नया विचार, नयी प्रेरणा देता हुआ दिखाई देता है। जिसके कारण पाठक का आत्मबल बढ़ता जाता है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ

डॉ. शंकर शेष जी के नाटकोंपर निम्नांकित दृष्टि से अध्ययन हो सकता है।

1) डॉ. शंकर शेष जी के नाटकों कें संवादों का अनुशीलन.

2) डॉ. शंकर शेष के नाटकों के नारी पात्र.